# सचित्र
# कूर्मांचल की लोक-कथाएँ

लेखक
जीवनचन्द्र पंत

東京外国語大学
157757
47. 3. 31
図書館蔵書

昭和46年度科学研究費購入図書
寄贈 東外大・東洋文化研
合同海外学術調査団
氏

१९५८
आत्माराम एण्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट
दिल्ली-६

## कथा-क्रम


| कथा | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| १. बिच्छू का पेड़ | · | १ |
| २. अंधा और कुबड़ा | · | १३ |
| ३. चतुर लाला | · | २२ |
| ४. नग-ठग | · | ३५ |
| ५. लाल सूवरी | · | ४४ |
| ६. राजा का सपना | · | ५५ |

एक था राजा। उसके केवल एक लड़की थी और कोई न था। जब वह बूढ़ा होकर मरने को हुआ तो उसने अपने मंत्री को बुलाकर कहा––"मंत्री, मैं अब थोड़े ही दिन का मेहमान हूँ।"

मंत्री हाथ जोड़ कर रोने लगा––"नहीं नहीं, महाराज ! ऐसा न कहिए।"

"चुप रहो मंत्री, मेरी बात सुनो, मौत रोकी नहीं जा सकती, न किसी की खुशामद की बातों से वह टाली ही जा सकती है। मैं अवश्य मरने वाला हूँ। तुम ध्यान से मेरी बात सुनो। मेरे बाद मेरी वारिस यही मेरी एकमात्र लड़की है। मुझे इसके लड़की होने का भी कोई दुःख न था, यह बिल्कुल नादान है, यही अफ़सोस है।"

मंत्री बोला––"महाराज ! आप जैसी आज्ञा देंगे वही किया जावेगा।

"क्या कहूँ मंत्री, उसकी